भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
दैनिक जागरण
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)
दिनांक : 15.02.2019

संगोष्ठी | 'नदी स्वास्थ्य-आंकलन से पुनर्स्थापन' विषयक गोष्ठी में बोले विशेषज्ञ

अविरलता है नदियों की बिगड़ी सेहत का इलाज

कार्यशाला में शामिल लोग ● जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : आइआइटी, बीएचयू के सिविल इंजीनियरिंग विभाग की ओर से स्वतंत्रता भवन सभागार में गुरुवार को 'नदी स्वास्थ्य-आंकलन से पुनर्स्थापन' विषयक तीन दिवसीय संगोष्ठी शुरू हुई। वक्ताओं ने पर्यावरण संतुलन के लिए नदियों की स्वच्छता और उसकी अविरलता को जरूरी बताया।

कहा नदियों के साथ जिस तरह का व्यवहार किया जा रहा है, वह भविष्य के लिए बहुत ही घातक है। इसकी प्रमुख वजह अंधाधुंध विकास के साथ ही लोगों का व्यक्तिगत स्वार्थ व अदूरदर्शिता है। गंगा का उदाहरण देते हुए बताया कि यह सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि एक मुकम्मल संस्कृति है। वर्तमान में इसकी दुर्दशा की मुख्य वजह अवैध रेत खनन के साथ ही बड़े-बड़े बांध बनाना व जल नियोजन को लेकर प्राकृतिक नियमों की पूरी तरह अनदेखी करना है। संगोष्ठी में जल पुरुष राजेंद्र सिंह, यूनिवर्सिटी ऑफ कनाडा के प्रो. राजेश सिंह, सीएसआइआर-निरी, नागपुर के निदेशक डा. राकेश कुमार, फ्रांस के डा. वालिद महेंजी आदि ने विचार व्यक्त किए। नमामि गंगे, राष्ट्रीय गंगा सफाई अभियान-भारत सरकार, आइसी इंपैक्ट-कनाडा, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय इंजीनियरिंग संस्थान व राष्ट्रीय इंजीनियरिंग संस्थान-पटना की ओर से संगोष्ठी के मुख्य अतिथि फ्रांस के प्रो. हार्वे रहे, जबकि अध्यक्षता आइआइटी, बीएचयू के कार्यवाहक निदेशक प्रो. एके सिन्हा ने किया। स्वागत प्रो. प्रभात कुमार सिंह, संचालन प्रो. बुंद कुमार व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. एसबी द्विवेदी ने किया।

● नदियों संग वर्तमान व्यवहार भविष्य के लिए साबित हो सकता है घातक

अविरलता के बिना गंगा की निर्मलता असंभव : राजेंद्र

● गोमुख से लेकर गंगा सागर तक सुनिश्चित हो गंगा जल की पहुंच
● कानून बना कर गंगा को 'ए' श्रेणी की नदी घोषित करे सरकार

जागरण संवाददाता, वाराणसी : एक माह के अर्द्धकुंभ के लिए सरकार ने चार हजार करोड़ रुपये खर्च किए, बावजूद इसके गंगा बिल्कुल भी साफ नहीं हुई। गंगा की निर्मलता तभी संभव है जब गोमुख से लेकर गंगा सागर तक उसका जल बिना रुके प्रवाहमान हो। यह कहना है जलपुरुष राजेंद्र सिंह का। बीएचयू स्थित स्वतंत्रता भवन में 'नदी, स्वास्थ्य और पुनर्स्थापन' विषयक गोष्ठी में शामिल होने पहुंचे राजेंद्र सिंह ने बातचीत में कहा कि लीन सीजन में किसी भी स्वस्थ नदी को कम से कम 62 फीसद प्रवाह चाहिए, जबकि गंगा को महज 20 फीसद ही प्रवाह मिल पाता है। हालत तो यह है कि गर्मियों में कई जगहों पर लोग पैदल ही गंगा पार करते हैं। इसके लिए सही मायने में काम करना है तो सरकार को चाहिए कि कानून बनाकर गंगा को 'ए' श्रेणी की नदी घोषित करे। गंगा की दयनीय दशा के लिए उन्होंने सरकारी संस्थाओं को सबसे अधिक जिम्मेदार ठहराया। कहा सरकारों की उदासीनता का ही परिणाम है कि गंगा में सीवर से लेकर औद्योगिक क्षेत्रों का दूषित जल प्रवाहित किया जा रहा है। अविरलता के बिना इसकी निर्मलता की बात बेमानी है। गोमुख से लेकर गंगा सागर तक गंगा के पानी का प्रवाह सुनिश्चित होने पर गंगा स्वयं निर्मल हो जाएंगी।